• ओडिशा...

प्रसाद में 'बेंत' मारने की प्रथा

ओडिशा के पुरी में भगवान जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध मंदिर है। जगन्नाथ पुरी चार धामों में सबसे बड़ा माना जाता है। यहां हर साल आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भगवान जगन्नाथ उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा जी की रथयात्रा निकाली जाती है। यहां भगवान श्रीकृष्ण जगन्नाथ जी के रूप में, बलराम जी बलभद्र के रूप में और बहन सुभद्रा जी विराजमान हैं। भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा में बड़ी संख्या में भक्त पहुंचते हैं।

धार्मिक मान्यता है कि रथयात्रा के दौरान रथों की रस्सियां खींचने से जाने अनजाने में किए सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष का मार्ग खुलता है. इस साल जगन्नाथ जी की रथयात्रा 16 जुलाई से शुरू होगी और 24 जुलाई तक चलेगी। जगन्नाथ जी की भी कुछ अनोखी परंपराएं हैं, जिनमें से एक बहुत ही परंपरा बहुत ही अजीब है। जगन्नाथ पुरी में भक्तों को प्रसाद में 'बेंत' मारी जाती है। इसका संबंध श्रीकृष्ण से बताया जाता है।

भक्तों को प्रसाद में 'बेंत' मारने की प्रथा-जगन्नाथ पुरी में भक्तों को प्रसाद के रूप में 'बेंत' बालपन से जुड़ी है। भगवान श्रीकृष्ण बचपन में बहुत नटखट

थे। मां यशोदा से उनको हमेशा डांट पड़ती रहती थी। यही नहीं कभी कभी मां योशदा भगवान को बेंत से भी मार दिया करती थीं. बेंत भगवान श्रीकृष्ण को अति प्रिय है. यही कारण है कि पुरी के मंदिर में इस बेंत को भगवान जगन्नाथ के पास रखा जाता है. दर्शन करने वाले भक्तों को पुजारी इस बेंत से मारते हैं।।

जीवन के पाप नष्ट हो जाते हैं- मान्यताओं के अनुसार पुजारी की बेंत जिन भक्तों को लग जाती है, उनके सारे पापों का नाश हो जाता है। बेंत खाने वाले भक्तों को जीवन में सही दिशा मिल जाती है और दुख भी कम हो जाते हैं। यह बेंत नारियल की लकड़ी से बनाई जाती है और इसको जगन्नाथ जी का विशेष प्रसाद माना जाता है। जगन्नाथ पुरी से बेंत लाने की सलाह भी दी जाती है। इस बेंत को घर के मंदिर में रखकर पूजा के बाद परिवार के सदस्यों को टच कराने से जीवन में सकारात्मकता आती है।

• चार धाम...

भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा

ओडिशा का पुरी स्थित जगन्नाथ धाम, चार धाम तीर्थों में से एक माना जाता है। हर साल यहां भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा निकाली जाती है, जो भारत के सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सवों में शामिल है। इस यात्रा में आस्था, भक्ति और परंपरा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को विशेष रूप से सुसज्जित विशाल रथों पर विराजमान कर जगन्नाथ मंदिर से गुंडीचा मंदिर तक ले जाया जाता है। वर्ष 2026 में यह पवित्र रथ यात्रा 16 जुलाई, गुरुवार से प्रारंभ होकर 24 जुलाई को बहुदा यात्रा के साथ संपन्न होगी। यह आयोजन हर साल लाखों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है, जो इसे अत्यंत पुण्यदायी और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं।

जगन्नाथ रथ यात्रा का महत्व

जगन्नाथ रथ यात्रा को अत्यंत पवित्र और फलदायी माना जाता है। इस अवसर पर भक्तों को रथों की रस्सियां खींचकर सीधे भगवान की सेवा करने का सौभाग्य मिलता है। मान्यता है कि इस यात्रा में शामिल होने या केवल दर्शन करने से ही विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि रथ खींचने से सभी पापों का नाश होता है और व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का मार्ग प्राप्त होता है। यह यात्रा भक्तों के लिए आध्यात्मिक उन्नति और ईश्वर से जुड़ाव का माध्यम मानी जाती है।

भगवान जगन्नाथ का रथ (नंदी घोष)

- भगवान जगन्नाथ का रथ 'नंदी घोष' नाम से जाना जाता है और इसे रथ यात्रा का सबसे प्रमुख रथ माना जाता है।
- इस रथ में कुल 16 विशाल पहिए होते हैं, जो इसे भव्य और विशेष बनाते हैं।
- इसका निर्माण लगभग 332 लकड़ी के टुकड़ों से किया जाता है, जो इसकी प्राचीन परंपरा और शिल्पकला को दर्शाता है।
- इस रथ की ऊंचाई लगभग 45 फीट होती है, जिससे यह दूर से ही आकर्षक दिखाई देता है।
- रथ को लाल और पीले रंगों से सजाया जाता है, जो शुभता और ऊर्जा का प्रतीक हैं।
- रथ के ऊपरी हिस्से में हनुमान जी और नृसिंह भगवान के प्रतीक चिन्ह अंकित होते हैं, जो इसकी धार्मिक महत्ता को बढ़ाते हैं।
- परंपरा के अनुसार यह रथ यात्रा में सबसे पीछे चलता है।

भगवान बलभद्र का रथ (तालध्वज)

- भगवान बलभद्र का रथ 'तालध्वज' कहलाता है और इसे शक्ति और अनुशासन का प्रतीक माना जाता है।
- इसमें कुल 14 बड़े पहिए होते हैं।
- इस रथ की ऊंचाई लगभग 44 फीट होती है, जो इसे अत्यंत भव्य बनाती है।
- इसे नीले रंगों से सजाया जाता है, जो शांति और स्थिरता का प्रतीक है।
- धार्मिक परंपरा के अनुसार यह रथ यात्रा में सबसे आगे चलता है।

देवी सुभद्रा का रथ 'दर्पदलन' कहलाता है और इसे

जगन्नाथ रथ यात्रा को अत्यंत पवित्र और फलदायी माना जाता है। इस अवसर पर भक्तों को रथों की रस्सियां खींचकर सीधे भगवान की सेवा करने का सौभाग्य मिलता है।

मान्यता है कि इस यात्रा में शामिल होने या केवल दर्शन करने से ही विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि रथ खींचने से सभी पापों का नाश होता है और व्यक्ति को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का मार्ग प्राप्त होता है...

संतुलन एवं सौम्यता का प्रतीक माना जाता है।

- इस रथ में कुल 12 पहिए होते हैं।
- इसकी ऊंचाई लगभग 43 फीट होती है।
- इस रथ को काले रंगों से सजाया जाता है, जो शक्ति और रहस्य का प्रतीक माना जाता है।
- यह रथ यात्रा में बीच में चलता है और दोनों भाइयों के बीच देवी सुभद्रा की उपस्थिति का प्रतीक है।
- तीनों रथों का निर्माण अत्यंत पवित्र विधि से किया जाता है और इसमें किसी धातु की कील का उपयोग नहीं होता।
- भक्तजन इन रथों को अत्यंत श्रद्धा, उत्साह और भक्ति भाव से खींचते हैं।
- यह संपूर्ण यात्रा आस्था, समर्पण और आध्यात्मिक एकता का अद्भुत प्रतीक मानी जाती है।

बहुत ही गुप्त होता है अनुष्ठान

श्री जगन्नाथ, बालभद्र, सुभद्रा देवी और सुदर्शन जी की प्रतिमाओं को बदलने के पीछे की वजह ये है कि ये प्रतिमाएं लकड़ी से बनाई जाती हैं और ये खंडित न हों, इसलिए इन प्रतिमाओं को बदल दिया जाता है. नवकलेवर अनुष्ठान के दौरान पूरे शहर भर की लाइटें बंद करवा दी जाती हैं। इससे हर स्थान पर अंधेरा हो जाता है. ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि ये अनुष्ठान बहुत ही गुप्त रूप से होता है।

मंदिर के पुजारी भी अनुष्ठान को नहीं देखते

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस प्रक्रिया को इसलिए गोपनीय रखा जाता है, ताकि जब ये काम किया जाए तो इस पर किसी नजर न पड़े. यही नहीं मंदिर के जो पुजारी इस अनुष्ठान को करते हैं, वो भी इसको नहीं देखते. भगवान जगन्नाथ, बालभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन जी की प्रतिमा को नीम की लकड़ी से बनाया जाता है. मंदिर के मुख्य पुजारी प्रतिमाएं बनाने के लिए पेड़ों का चुनाव करते हैं. मान्यता है कि नीम करीब 100 साल पुरानी होनी चाहिए और उसमें किसी भी प्रकार का दोष नहीं होना चाहिए।

बीमार होते हैं जगन्नाथ

हर साल आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन ओडिशा के पुरी स्थित भगवान जगन्नाथ जी मंदिर में उनकी रथयात्रा का पावन पर्व मानाया जाता है। इस साल ये पावन पर्व 16 जुलाई से लेकर 24 जुलाई तक चलेगा. ये सिर्फ एक धार्मिक त्योहार नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा और भक्ति का अद्भुत संगम माना जाता है। इस दौरान भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा जी की रथयात्रा निकाली जाती है, जिसका हिस्सा बनने और अपने भगवान दर्शन करने लाखों भक्त पुरी पहुंचते हैं। रथयात्रा से पहले ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा के दिन स्नान पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है।

इस दौरान जगन्नाथ जी, बलभद्र जी और सुभ्रदा जी को 108 पवित्र घड़ों के जल से विशेष स्नान (अभिषेक) कराया जाता है. मान्यता है कि इसके बाद भगवान बीमार हो जाते हैं और 15 दिन विश्राम करते हैं। इस दौरान मंदिर के कपाट बंद रहते हैं और भगवान का विशेष औषधीय उपचार किया जाता है। उनको काढ़े, औषधियों और जड़ी-बूटियों से तैयार विशेष भोग चढ़ाया जाता है। इस साल स्नान पूर्णिमा मनाई जा चुकी है और भगवान इस समय बीमार हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं भगवान स्नान की वजह से नहीं, बल्कि अपने भक्त के प्यार की वजह से बीमार होते हैं। आइए जानते हैं ये रोचक कथा।

पौराणिक कथा के अनुसार

जगन्नाथ जी के हर साल बीमार पड़ने के पीछे एक पौराणिक कथा है। इस कथा के अनुसार, भगवान जगन्नाथ जी के एक परम भक्त हुआ करते थे। उनका नाम था माधव दास। माधव दास को लंबे समय से एक बीमारी ने अपनी चपेट में ले रखा था। उन्होंने अपने आराध्य से प्रार्थना की। उन्होंने भगवान जगन्नाथ जी से कहा कि वो उनके कष्टों को दूर करें। इस पर भगवान ने उनको बताया कि उनके पिछले जन्म के कर्मों के कारण उनकी 15 दिन की बीमारी अभी शेष है।

भक्त माधव दास की बीमारी भगवान ने स्वयं पर ली

भगवान जगन्नाथ जी ने अपने भक्त को बताया कि 15 दिन बाद ही उनको बीमारी से मुक्ति मिल सकेगी, लेकिन अपने भक्त का कष्ट देखकर भगवान का हृदय पिघल गया। मान्यता है कि भगवान ने इसके बाद माधव दास की अंतिम 15 दिन बीमारी स्वयं अपने ऊपर ले ली। इसके परिणामस्वरूप माधव दास सेहतमंद हो गए. तब से ही स्नान पूर्णिमा के बाद से 15 दिन भगवान जगन्नाथ जी के बीमार होने की परंपरा चली आ रही है।

भगवान जगन्नाथ की ये कथा सिर्फ एक धार्मिक मान्यता भर नहीं है, बल्कि भगवान और भक्त के बीच अटूट प्रेम की कहानी है. जो ये बताती है कि अपने सच्चे भक्त के दुख और कष्ट भगवान स्वयं पर लेने के लिए खड़े रहते हैं।

■ पं. नित्यानंद

• वास्तु ...

सोफा और टीवी

अक्सर बहुत से घरों में सजावट के चक्कर में सोफा और टीवी कहीं भी रख दिया जाता है, लेकिन वास्तु के जानकार बताते हैं कि गलत दिशा में रखा सोफा और टीवी घर में नकारत्मक ऊर्जा को बढ़ा सकते हैं.वास्तु शास्त्र में कहा गया है कि सोफा और टीवी कभी भी उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) और दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण) दिशा में रखने से बचें. उत्तर-पूर्व में सोफा और टीवी रखने से मानसिक तनाव और पैसों की समस्याएं हो सकती हैं। इन दोनों दिशाओं में रखा सोफा और टीवी परिवार में कलह और अशांति का कारण भी बन सकता है। लिविंग रूम में सोफा हमेशा दक्षिण या पश्चिम दिशा की दीवार से सटाकर ही रखना चाहिए। सोफा रखने के लिए ये दोनों दिशाएं शुभ मानी जाती हैं। इससे घर के सदस्यों में आपस में प्रेम बना रहता है। घर का टीवी हमेशा दक्षिण-पूर्व दिशा में रखें। टीवी रखने के लिए ये दिशा सबसे अच्छी मानी जाती है। वास्तु के अनुसार, ये दिशा अग्नि का प्रतीक है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी इसी श्रेणी में आते हैं। अगर दक्षिण-पूर्व दिशा में जगह न हो, तो टीवी उत्तर या पूर्व दीवार

• नारियल..

ज्योतिष की मान्यताओं के अनुसार शुक्रवार के दिन कुछ खास उपाय करने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। लंबे समय चली आ रही आर्थिक तंगी दूर होती है. घर में बरकत बनी रहती है। व्यापार की रुकावट दूर होती है। इस दिन पूजा के समय मां लक्ष्मी को कुछ चीजें अर्पित करके फिर उनको तिजोरी में रख दें। ऐसा करने से धन बढ़ता है। पूजा के समय धन की देवी को नारियल अवश्य ही अर्पित करें। माना जाता है कि मां को नारियल अतिप्रिय है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित